हमारी पोथी

भाग-3

पाठ्य पुस्तक लेखन एवं निर्माण समिति

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बेइंतिहा मेहरबान और रहम फ़रमानेवाला है।

दो शब्द

मर्कज़ी दर्सगाह रामपुर के भूतपूर्व नाज़िम (व्यवस्थापक) जनाब अफ़ज़ल हुसैन साहब ने लगभग आधी शताब्दी पहले भारतीय मुसलमानों की नई पीढ़ी की आरम्भिक कक्षाओं के लिए पाठ्य पुस्तकों की एक अत्यन्त उपयोगी शृंखला तैयार की थी जिसमें बच्चों के मनोविज्ञान, मानसिक स्तर, उम्र, रुचि और सामाजिक अपेक्षाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया था। अल्लाह की कृपा से ये पुस्तकें पूरे देश में लोकप्रिय हुई और इन पुस्तकों ने छात्र-छात्राओं के मन-मस्तिष्क और विचारों को इस्लामी रंग में रंगने का बहुत ही उल्लेखनीय कार्य किया। वर्तमान शृंखला में उनके द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चलने का पूरा-पूरा प्रयास किया गया है। अल्लाह तआला मरहूम जनाब अफ़ज़ल हुसैन साहब की सेवा को स्वीकार करके उनपर अपनी कृपा-वर्षा करे। आमीन!

पाठ्य पुस्तकों का पुनरीक्षण, संशोधन और नवीनीकरण एक सतत् लाभदायक और अनिवार्य प्रक्रिया है। हमने भी अपनी सभी पाठ्य पुस्तकों को और अधिक उपयोगी तथा समयानुकूल बनाने के लिए इन्हें नये सिरे से तैयार करने की योजना बनाई है।

भाषा बच्चों के व्यक्तित्व के विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है। भाषा की पाठ्य पुस्तकों की तैयारी के दौरान हमने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि भाषा-बोध के लिए ऐसी पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाए जिससे बच्चों में भाषा की सभी आधारभूत कुशलताएँ – सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने चिन्तन-मनन और अध्ययन की क्षमताएँ – विकसित हो जाएँ तथा उनमें अतिरिक्त अध्ययन के प्रति रुचि बढ़े। हमने यह प्रयास भी किया है कि जीवन के अनुकूल विषय-वस्तु प्रस्तुत की जाए जिससे छात्र-छात्राओं के अन्दर वांछित जीवन-मूल्यों, मानवीय सदगुणों के बीज अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित हों और उनका सर्वांगीण विकास सम्भव हो सके।

पाठ्य पुस्तकों की तैयारी के समय हमने बच्चों की उम्र, उनकी अपेक्षा तथा आवश्यकता, अभिरुचि, मनोविज्ञान और बौद्धिक क्षमता का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा है।

हमने अपनी पाठ्य पुस्तकों में ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने की कोशिश की है, जिससे बच्चों को अपने परिवेश और वातावरण के प्रति सचेत तथा जागरूक बनाया जा-सके, उनके अन्दर इससे सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त करने के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हो और उनके कार्य-कलापों में यथोचित परिवर्तन हो। साथ ही, ये चीज़ें उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से अवगत भी करा सकें।

प्रत्येक पाठ के अन्त में पर्याप्त अभ्यास दिए गए हैं, जो छात्र-छात्राओं में न केवल भाषा-बोध, लेखन, पाठ्य सामग्री को समझने और स्मरण रखने में सहायक होंगे, बल्कि उनमें चिन्तन-मनन की क्षमता और व्यक्तिगत रूप से अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करेंगे। ये अभ्यास बच्चों के ज्ञान में उत्तरोत्तर वृद्धि और विकास के साधन तो सिद्ध होंगे ही, उनकी मानसिक और शैक्षणिक क्षमता के विकास में भी सहायक होंगे।

हम अपने उन सभी मित्रों और उन सभी महानुभावों के आभारी हैं, जिन्होंने पुस्तक की तैयारी के क्रम में विभिन्न प्रकार से सहयोग दिया है। हम उन सज्जनों के भी आभारी हैं, जिनकी कविताएँ, लेख, निबन्ध और पहेलियाँ इत्यादि ज्यों-की- त्यों या कुछ परिवर्तन के साथ इस पुस्तक में सम्मिलित हैं।

अल्लाह तआला की कृपा-छाया सदैव उन महानुभावों को सुख-शान्ति प्रदान करती रहे।

हमने इस पुस्तक को यथासम्भव सुन्दर और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करके अधिक-से-अधिक उपयोगी और लाभदायक बनाने का प्रयास किया है। हम अपने प्रयास में किस हद तक सफल हो सके हैं, इसका वास्तविक मूल्यांकन तो शिक्षकगण, अभिभावक और पढ़ने-पढ़ाने में रुचि रखनेवाले ज्ञानीजन के बहुमूल्य सुझावों, विचारों और टिप्पणियों से ही हो सकेगा।

21.07.2004
दिल्ली

मुहम्मद अशफ़ाक़ अहमद
निगराँ (निरीक्षक)

विषय-सूची

पाठ-1

हम्द

आओ शीश नवाएँ बच्चो,
ईश्वर के गुण गाएँ बच्चो ।

जिसने यह संसार बनाया,
और हमें फिर यहाँ बसाया ।

जिसने पानी और हवा दी,
धरती सूरज से चमका दी ।

जिसके हैं ये चन्दा-तारे,
जिसके पुष्प अनोखे प्यारे ।

जिसने सीधा पंथ दिखाया,
जीने का भी ढंग सिखाया ।

जिसने माता-पिता दिए हैं,
और सभी उपकार किए हैं ।

पढ़ें-लिखें क्या चिन्ता हमको,
धन्यवाद दें अपने रब को ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो –

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
हम्द	=	वह कविता जिसमें अल्लाह का गुणगान हो	शीश नवाएँ	=	सिर झुकाएँ
			संसार	=	दुनिया
ईश्वर	=	अल्लाह	गुण गाएँ	=	तारीफ़ करें
धरती	=	ज़मीन	पुष्प	=	फूल
पंथ	=	रास्ता	उपकार	=	भलाई
चिन्ता	=	फ़िक्र	धन्यवाद	=	शुक्रिया

2. उत्तर लिखो –

(क) हमें किसके आगे शीश नवाना चाहिए?

(ख) संसार को किसने बनाया?

(ग) ईश्वर ने हमारे लिए कौन-कौन-सी चीज़ें बनाई हैं?

3. पूरा करो –

(क) जिसने सीधा पंथ दिखाया, ... ।

(ख) पढ़ें-लिखें क्या चिन्ता हमको, ... ।

4. करो –

इस हम्द को याद करो ।

पाठ-2

नअ़त

सबसे अच्छे सबसे न्यारे ।
आँख के तारे सबके प्यारे ॥

सीधी राह दिखानेवाले ।
सच्ची बात बतानेवाले ॥

एक ख़ुदा से डरनेवाले ।
दुखियों का दुख हरनेवाले ॥

पाक हमेशा रहनेवाले ।
बात पते की कहनेवाले ॥

सबसे ऊँचा उनका नाम ।
सबसे ऊँचा उनका काम ॥

मुहम्मद उनका प्यारा नाम ।
उनपर लाखों दुरूद-सलाम ॥

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो –

शब्द		अर्थ
नअ़त	=	हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की तारीफ़ में लिखी गई कविता
राह	=	रास्ता
पते की बात	=	ज्ञान की बात, काम की बात

2. उत्तर लिखो –

(क) इस कविता में किसकी तारीफ़ की गई है?

(ख) सीधी राह दिखानेवाले कौन हैं?

3. पूरा करो –

(क) .... । आँख के तारे सबके प्यारे ॥

(ख) एक ख़ुदा से डरनेवाले । .... ॥

4. करो –

इस नअ़त को याद करके सुनाओ । अपने अध्यापक से पूछकर कोई दूसरी नअ़त भी याद करो ।

पाठ-3

गेंद-बल्ला

जमाल और नासिर दो मित्र थे । दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे एक दिन नासिर घर में अकेला था । अम्मी पड़ोस में गई थीं । जमाल दौड़ा आया और बोला, ''आओ नासिर! चलो, गेंद-बल्ला खेलें ।''
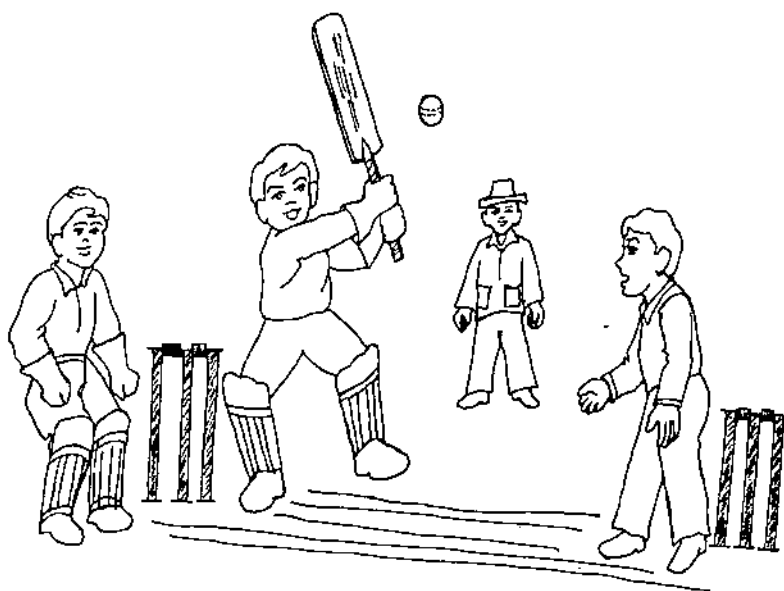
नासिर के पास गेंद भी थी और बल्ला भी था । नासिर घर से कोने में रखा बल्ला उठा लाया और बोला, ''गेंद अलमारी पर है।

अम्मी घर में नहीं हैं । हमारा हाथ वहाँ तक पहुँच नहीं सकता । गेंद कैसे उतारें?''

नासिर ने पहले पंजों के बल खड़े होकर गेंद उतारनी चाही, लेकिन उसका हाथ न पहुँच सका । वह दो ईंटें लाया । ईंटों को नीचे-ऊपर रखकर उसपर खड़ा हुआ । फिर भी उसका हाथ गेंद तक नहीं पहुँच सका । अब दोनों दोस्त एक तिपाई उठा लाए । अब भी काम नहीं बना । जमाल बोला, ''लो, बल्ले से गेंद लुढ़काकर नीचे गिरा दो ।'' नासिर ने बल्ले से गेंद को लुढ़काया । गेंद नीचे आ गिरी। साथ ही अलमारी पर रखी प्याली भी गिर गई और टुकड़े-टुकड़े हो गई । नासिर हक्का-बक्का रह गया ।

जमाल ने कहा, ''देखते क्या हो? आओ, चुपके से भाग चलें । तुम्हारी अम्मी को पता भी न चलेगा कि प्याली किसने तोड़ी है ।'' लेकिन नासिर चुपचाप खड़ा रहा ।

जमाल फिर बोला, ''क्या पिटना ही चाहते हो, भाग क्यों नहीं चलते?''

नासिर बोला, ''मैं तो नहीं जाता, अम्मी न जाने किस-किस पर शक करेंगी । ग़लती मेरी और पिट जाए कोई और । यह तो बुरी बात है ।''

इतने में नासिर की अम्मी आ गईं । उन्होंने देखा कि फ़र्श पर प्याली के टुकड़े बिखरे पड़े हैं और नासिर मियाँ तिपाई पर खड़े आँसू

बहा रहे हैं ।

"अम्मी, मुझसे प्याली टूट गई ।" नासिर मियाँ ने रोते हुए कहा।

अम्मी बड़े प्यार से बोलीं, "रोते क्यों हो? तुमने जान-बूझकर तो तोड़ी नहीं है, टूट गई तो क्या हुआ? आगे ध्यान रखना । तुमने सच बोला, बहुत अच्छा किया । सच बोलनेवाले बच्चे बहुत अच्छे होते हैं।"

जमाल चुपके से खिसकने ही वाला था । वह यह देखने के लिए रुक गया था कि नासिर की कैसी पिटाई होती है । परन्तु अम्मी ने उसकी पिटाई तो न की, बल्कि सच बोलने पर उसको शाबाशी दी और प्यार भी किया ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो —

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
कक्षा	=	दरजा, क्लास	हक्का-बक्का	=	घबराया-सा
परन्तु	=	लेकिन			

2. उत्तर लिखो —

(क) जमाल नासिर को कहाँ ले जाना चाहता था?

(ख) गेंद के साथ और कौन-सी चीज़ गिरी?

(ग) नासिर क्यों नहीं भागा?

(घ) टूटी प्याली देखकर अम्मी ने नासिर से क्या कहा?

(ङ) अम्मी ने नासिर को शाबाशी क्यों दी

3. बताओ, किसने किससे कहा –

(क) आओ नासिर! चलो, गेंद-बल्ला खेलें।

(ख) लो, बल्ले से गेंद लुढ़काकर नीचे गिरा लो।

(ग) देखते क्या हो? आओ, चुपके से भाग चलें।

(घ) ग़लती मेरी और पिट जाए कोई और?

(ङ) सच बोलनेवाले बच्चे बहुत अच्छे होते हैं।

4. हर एक शब्द को पाँच-पाँच बार लिखो –

कक्षा, पड़ोस, अम्मी, बल्कि, परन्तु,
पहुँच, ईंट, प्याली, आँसू, ध्यान

पाठ-4

चिड़िया का बच्चा

सलमा और सकीना दो बहनें थीं । सलमा बड़ी थी और सकीना छोटी । एक दिन दोनों आँगन में खेल रही थीं । अचानक चिड़िया का एक बच्चा आँगन में आ गिरा । सकीना ने दौड़कर उसे पकड़ लिया और खुश होकर बोली, ''मैं तो इसके पैरों में धागा बाँधूँगी । धागा पकड़कर इसे खूब उड़ाऊँगी ।''

सलमा ने मना किया, लेकिन सकीना न मानी ।

थोड़ी देर में ही वहाँ बहुत-सी चिड़ियाँ जमा हो गईं । सभी ज़ोर-ज़ोर से चीं-चीं करने लगीं । सकीना के हाथ में चिड़िया का बच्चा चुप साधे काँप रहा था ।

सलमा ने सकीना को समझाया, ''अरी सकीना! यह क्या कर रही हो? इसे तंग मत करो । छोड़ दो । अभी यह बच्चा है । इसकी

अम्मी इसे उड़ना सिखा रही है । यह वही गौरैया तो है जिसने हमारी छत में घोंसला बनाया है । देखो, वह कितनी बेचैन है । ज़ोर-ज़ोर से चीं-चीं कर रही है । अगर तुम्हारे पैरों में रस्सी बाँधकर कोई खींचे तो तुम्हें कितना दुख होगा । हमारा दिल कितना बेचैन होगा । मेरी अच्छी बहना, इसे छोड़ दो ।''
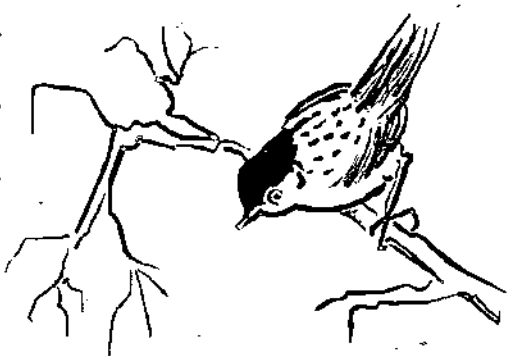
''ना, ना बाजी, मैं इसे नहीं छोड़ूँगी । मैं भी इसे उड़ना सिखाऊँगी । इसके संग खेलूँगी ।'' सकीना अपनी ज़िद पर अड़ी रही।

इतने में उनकी अम्मी भी आ गईं ।

अम्मी ने बड़े प्यार से सकीना से कहा, ''मेरी प्यारी बिटिया, इसे छोड़ दो । ज़िद न करो । ज़िद्दी बच्चे अच्छे नहीं होते । तुम इसे छोड़ दो तो अल्लाह ख़ुश होगा । मैं तुम्हें बहुत सुन्दर-सी गुड़िया दूँगी । देखो, वह अलमारी में रखी है ।''

''लाओ, दिखाओ मुझे गुड़िया ।'' अम्मी की बात सुनकर सकीना गुड़िया के लिए ललचा गई ।

अम्मी ने गुड़िया लाकर सकीना को दे दी ।

''यह लो अपनी चिड़िया । अब मैं इस गुड़िया के संग ही खेलूँगी ।'' अम्मी को चिड़िया का बच्चा देती हुई सकीना बोली ।

''शाबाश, मेरी अच्छी बिटिया! अच्छे बच्चे बड़ों का कहना मानते

हैं । वे ज़िद नहीं करते ।'' अम्मी चिड़िया का बच्चा लेकर बोलीं ।

अम्मी ने चिड़िया के बच्चे को मुंडेर पर बिठा दिया । चिड़ियों ने शोर मचाना बन्द कर दिया और बच्चे को साथ लेकर उड़ गईं ।

फिर अम्मी ने सकीना को गोद में उठा लिया । उसे ख़ूब दुलार-प्यार किया ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो —

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
संग	=	साथ	ज़िद	=	हठ
सुन्दर	=	ख़ूबसूरत	ललचा गई	=	पाने के लिए बेचैन हो गई

2. उत्तर लिखो —

(क) सकीना ने आँगन में क्या पकड़ा?

(ख) सकीना के हाथ में चिड़िया के बच्चे की क्या हालत थी?

(ग) चिड़िया अपने बच्चे को क्या सिखा रही थी?

(घ) सकीना की ज़िद क्या थी?

(ङ) अम्मी ने सकीना को कैसे मनाया?

(च) अम्मी ने चिड़िया के बच्चे के साथ क्या किया?

3. बताओ, किसने किससे कहा —

(क) अभी यह बच्चा है । इसकी अम्मी इसे उड़ना सिखा रही है।

(ख) अगर तुम्हारे पैरों में रस्सी बाँधकर कोई खींचे तो तुम्हें कितना दुख होगा ।

(ग) तुम इसे छोड़ दो तो अल्लाह खुश होगा। मैं तुम्हें बहुत सुन्दर-सी गुड़िया दूँगी ।

(घ) यह लो अपनी चिड़िया । अब मैं इस गुड़िया के संग ही खेलूँगी ।

(ङ) शाबाश, मेरी अच्छी बिटिया! अच्छे बच्चे बड़ों का कहना मानते हैं । वे ज़िद नहीं करते ।

4. तुम्हें इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

5. करो —

अम्मी की तरह तुम भी कोई नेक काम करो ।

पाठ-5

प्यारे नबी (सल्ल०)

प्यारे नबी का शुभ नाम हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) है । प्यारे नबी (सल्ल०) मक्का में पैदा हुए । मक्का अरब देश का एक प्रसिद्ध नगर है । अरब में बहुत-से क़बीले थे । उन क़बीलों में क़ुरैश क़बीला सर्वश्रेष्ठ था । प्यारे नबी (सल्ल०) का सम्बन्ध क़ुरैश क़बीले ही से था ।

प्यारे नबी (सल्ल०) के पिताजी का नाम अब्दुल्लाह और माताजी का नाम बीबी आमिना था । आप (सल्ल०) के बचपन ही में माता-पिता का देहान्त हो गया । आप (सल्ल०) अनाथ हो गए । दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आप (सल्ल०) को पाला-पोसा । आप (सल्ल०) ने दाई हलीमा का दूध पिया । जब आप (सल्ल०) आठ वर्ष के हुए तो दादा जान का भी देहान्त हो गया । फिर चचा अबू तालिब ने आपको बड़े प्रेम से पाला-पोसा । वे जहाँ जाते, आप (सल्ल०) को साथ ले जाते ।

प्यारे नबी (सल्ल०) बचपन ही से बड़े सच्चे थे । सभी आपको 'सादिक़' कहते । आप (सल्ल०) बड़े अमानतदार भी थे । सब

आपको 'अमीन' कहते। सब आपका आदर करते। जब आप (सल्ल०) बड़े हुए तो बीबी ख़दीजा (रज़ि०) से आपका विवाह हुआ।

जब प्यारे नबी (सल्ल०) चालीस वर्ष के हुए तो अल्लाह ने आपको नबी बनाया। आप पर क़ुरआन उतारा। आप (सल्ल०) अल्लाह के आदेश पर चलते। सबको अल्लाह का संदेश सुनाते। भले लोग मान गए। आपके साथ हो गए। बुरे लोग आपके शत्रु हो गए। मारा-पीटा, घर से बे-घर किया। आप (सल्ल०) सब कुछ सहते रहे, सहते रहे और अपना काम करते रहे। आख़िर अल्लाह की मदद आई। बुरे लोगों का ज़ोर टूटा। सारे अरब में इस्लाम का डंका बज गया।

दुरूद हो प्यारे नबी पर!
सलाम हो प्यारे नबी पर!

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो —

शब्द		अर्थ
शुभ	=	अच्छा
नबी	=	अल्लाह का पैग़ाम लानेवाला।
क़बीला	=	ख़ानदान

सर्वश्रेष्ठ = सबसे उत्तम, सबसे अच्छा

देहान्त = मौत, मृत्यु

दाई = दूसरे के बच्चे को दूध पिलानेवाली और सेवा करनेवाली औरत

सादिक़ = सदा सच बोलनेवाला

अमीन = अमानत की रक्षा करनेवाला

विवाह = शादी

वर्ष = साल

संदेश = पैग़ाम

डंका बजना = धूम मचना

2. उत्तर लीखो —

(क) प्यारे नबी (सल्ल०) कहाँ पैदा हुए थे?

(ख) प्यारे नबी (सल्ल०) के माता-पिता का क्या नाम था?

(ग) प्यारे नबी (सल्ल०) को किसने दूध पिलाया?

(घ) प्यारे नबी (सल्ल०) को 'सादिक़' क्यों कहा जाता है?

(ङ) प्यारे नबी (सल्ल०) को 'अमीन' क्यों कहा जाता है?

(च) अल्लाह तआला ने प्यारे नबी (सल्ल०) को कितने वर्ष की उम्र में नबी बनाया?

(छ) प्यारे नबी (सल्ल०) ने लोगों को किसका संदेश सुनाया?

(ज) प्यारे नबी (सल्ल०) पर कौन-सी किताब उतरी?

3. हर एक शब्द को पाँच-पाँच बार लिखो —

अल्लाह, मुहम्मद, मक्का, प्रसिद्ध, देश, क़ुरैश,
श्रेष्ठ, दूध, प्रेम, सच्चा, क़ुरआन, इस्लाम, दुरूद ।

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो —

क़ुरआन, क़ुरैश, सादिक़, इस्लाम, अमानतदार,
अनाथ, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

(क) प्यारे नबी (सल्ल०) का शुभ नाम .... है।

(ख) प्यारे नबी (सल्ल०) .... क़बीले से थे ।

(ग) प्यारे नबी (सल्ल०) बचपन ही में .... हो गए।

(घ) सभी प्यारे नबी (सल्ल०) को .... कहते ।
आप बड़े .... भी थे ।

(ङ) प्यारे नबी (सल्ल०) पर .... उतरा ।

(च) सारे अरब में .... का डंका बज गया।

5. विलोम शब्द लिखो —

दादा – दादी	चाचा – ....
लड़का –	बकरा– ....
माता –	भाई – ....

पाठ-6

बिल्ली

हमने एक बिल्ली पाली है । उसका नाम पूसी है । भाई जान उसे 'चूहों की मौसी' कहते हैं । हम पूसी को पुस-पुस कहकर बुलाते हैं । वह म्याऊँ-म्याऊँ करके हमारी गोद में आ बैठती है । हम अपनी पूसी को दूध पिलाते हैं । अम्मी कहती हैं कि बिल्ली का ध्यान सदा छिछड़ों में रहता है । तभी तो हम छिछड़े ला देते हैं । वह छिछड़े बड़े चाव से खाती है ।

पूसी चूहे ख़ूब पकड़ती है । रसोईघर अथवा अनाज के गोदाम में छिपकर बैठ जाती है । जैसे ही कोई चूहा निकलता है, पूसी उसे जा दबोचती है और मूँछें फुला-फुलाकर, मज़े ले-लेकर चट कर जाती है । इसलिए जब से पूसी आई है, घर में एक भी चूहा न रहा । कुछ तो पूसी चट कर गई और कुछ डर कर भाग गए ।

पूसी की आँखें बड़ी तेज़ हैं । अँधेरे में भी देख लेती है । उसकी सुनने की शक्ति इतनी तेज़ है कि चूहे बिल के भीतर चलते हैं, फिर

भी वह आहट सुन लेती है । पूसी के पंजे गद्दीदार हैं । अतः चूहे उसकी आहट नहीं पाते । अब भला पूसी की पकड़ से चूहे किस प्रकार बच सकते हैं ।

एक बार चूहों ने सभा करके तय किया कि पूसी के गले में घंटी बाँध दी जाए । जब उसके चलने पर घंटी बजे तो वे बिल में छिप जाएँ। किसी ने पूँछ पकड़ने का वादा किया, किसी ने पैर, तो किसी ने कान । परन्तु जब यह प्रश्न उठा कि उसकी 'म्याऊँ' को कौन पकड़ेगा तो कोई तैयार न हुआ । अतः घंटी न बँध सकी ।

पूसी अब भी स्वतंत्र फिरती है और चूहों का शिकार करती रहती है।

पूसी के रहते दूसरी बिल्ली घर में घुस नहीं सकती । पूसी उसे मार-मार कर भगा देती है ।

एक रात हम सब सो रहे थे । चुपके से एक बिल्ली घर में घुस आई । पूसी ने देख लिया और गुर्राकर उसपर झपट पड़ी । फिर क्या था, दोनों ने इतना शोर मचाया कि घर-भर की नींद उचट गई ।

पूसी कुत्ते से बहुत डरती है । एक दिन मैं पूसी को लिए बाहर चला गया । रास्ते में पड़ोसी का कुत्ता भौं-भौं करके लपका । पूसी कूदकर पेड़ पर चढ़ गई । कुत्ता न चढ़ सका । नीचे खड़ा कुछ देर तक भौंकता रहा । फिर थक-हारकर चला गया । अल्लाह ने पूसी को पेड़ पर चढ़ने की कला दी है, ताकि वह ख़तरे से अपने आपको बचा सके।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो –

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
मौसी	=	ख़ाला	चाव	=	शौक़
चट कर जाना	=	खा जाना	दबोचना	=	पकड़ लेना
शक्ति	=	ताक़त	अतः	=	इसलिए
सभा	=	जलसा	भीतर	=	अन्दर
रसोईघर	=	बावर्चीख़ाना, खाना पकाने की जगह			

2. उत्तर लिखो –

(क) भाई जान पूसी को क्या कहते हैं?

(ख) चूहों ने सभा क्यों बुलाई?

(ग) बिल्ली की म्याऊँ पकड़ने के लिए कोई चूहा तैयार क्यों नहीं हुआ?

(घ) एक रात घरवालों की नींद क्यों उचट गई?

(ङ) पूसी को पेड़ पर चढ़ने की शक्ति किसने दी?

3. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो –

(छिछड़ों, पूसी, अँधेरे, कुत्ते, चट, शक्ति)

(क) बिल्ली का नाम..............................है।

(ख) बिल्ली का ध्यान सदा..............में रहता है।

(ग) चूहों को बिल्ली..............................कर जाती है ।

(घ) बिल्ली..............................में भी देख लेती है ।

(ङ) बिल्ली....................................से डरती है ।

(च) अल्लाह ने बिल्ली को पेड़ पर चढ़ने की..........दी है ।

4. हर एक शब्द को पाँच-पाँच बार लिखो —

बिल्ली	मौसी	म्याऊँ	ध्यान	मूँछें	आँखें
स्वतंत्र	अँधेरा	शक्ति	गद्दीदार	अतः	प्रकार
पूँछ	प्रश्न	गुर्राकर	नींद	कुत्ता	भौंकना

5. कारण बताओ (मौखिक) —

(क) जब से पूसी घर में आई है, एक भी चूहा न रहा ।

(ख) पूसी बिल के भीतर चलनेवाले चूहों की आहट सुन लेती है।

(ग) चूहे बिल्ली की आहट नहीं सुन सकते ।

(घ) पूसी के रहते हुए दूसरी बिल्ली घर में घुस नहीं सकती ।

6. करो —

बिल्ली के बारे में पाँच वाक्य लिखो ।

पाठ-7

चलो मदरसे

चलो मित्रवर, चलो मदरसे,
निकलो घर से, निकलो घर से।

लिखना सीखो, पढ़ना सीखो,
दिन-दिन आगे बढ़ना सीखो ।

दुष्कर्मों के पास न जाओ,
सीधा रस्ता चलना सीखो ।

सबसे मेल-मुहब्बत रखो,
सबके दिल में बसना सीखो।

पाकर ज्ञान, विद्या, शिक्षा,
सबकी सेवा करना सीखो ।

निकलो घर से, निकलो घर से,
चलो मित्रवर, चलो मदरसे ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो –

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
दुष्कर्म	=	बुरा काम	ज्ञान	=	जानकारी
विद्या	=	इल्म	शिक्षा	=	तालीम
सेवा	=	ख़िदमत			

2. उत्तर लिखो –

(क) हम मदरसे क्यों जाते हैं?

(ख) हम मदरसे में क्या-क्या सीखते हैं?

(ग) हमें शिक्षा पाकर क्या करना चाहिए?

3. वाक्य पूरे करो –

(क) लिखना सीखो, ... सीखो ।

(ख) दिन-दिन ...... बढ़ना .... ।

(ग) सबसे .... मुहब्बत .... ।

(घ) सबकी .... करना सीखो ।

4. करो –

इस कविता को याद करके अपनी कक्षा में सुनाओ ।

पाठ-8

रुपये की थैली

साजिद और माजिद दो भाई थे । दोनों एक ही पाठशाला में पढ़ते थे । एक दिन की बात है । पाठशाला में छुट्टी हुई । दोनों ने अपने-अपने बस्ते उठाए और घर की ओर चल पड़े ।

वे हँसते-खेलते जा रहे थे । अचानक साजिद की नज़र एक छोटे-से बैग पर पड़ी । बैग बीच रास्ते में पड़ा था । साजिद ने दौड़कर उसे उठा लिया । बोला, ''भाई जान! न जाने यह किसका बैग है? इसमें तो रुपये रखे जाते हैं ।''

माजिद ने बैग ले लिया । उसे खोलकर देखा । उसमें कई जेबें थीं । एक जेब में बहुत-से रुपये रखे थे । एक में कुछ काग़ज़ थे । एक जेब में एक तस्वीर भी थी । तस्वीर के पीछे लिखा था –

मनमोहन प्रसाद, बी० ए०, बी० टी०

हेडमास्टर, डी० ए० वी० स्कूल ।

पता देखते ही माजिद बोल पड़ा, ''मैंने डी० ए० वी० स्कूल देखा है । चलो, वहाँ चलते हैं । मास्टर साहब बहुत परेशान होंगे।''
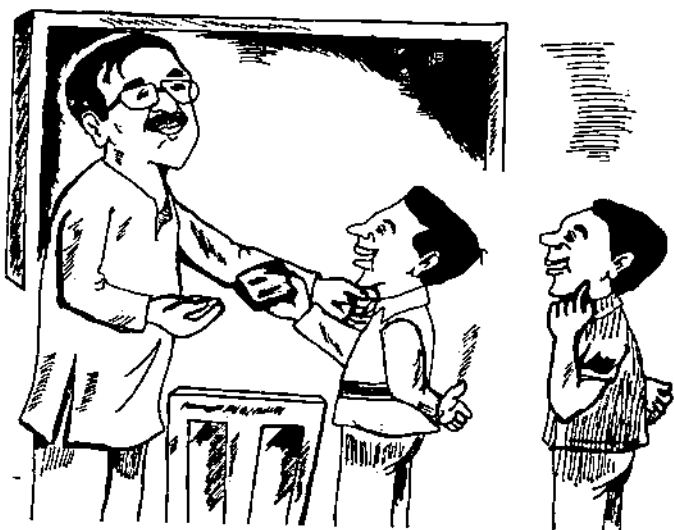
दोनों डी० ए० वी० स्कूल पहुँचे । चपरासी से हेडमास्टर साहब का कमरा पूछा । चपरासी उन्हें हेडमास्टर साहब के पास ले गया । माजिद ने बैग उनको दे दिया । बैग हेडमास्टर साहब ही का था । बच्चों की ईमानदारी पर वे बहुत प्रसन्न हुए । दोनों की बड़ी प्रशंसा की और कुछ रुपये देते हुए बोले, ''लो, ये रुपये । मिठाई खा लेना ।''

''नहीं सर, हम नहीं लेंगे ये रुपये । अम्मी कहती हैं कि किसी की खोई हुई चीज़ उस तक पहुँचाने से अल्लाह ख़ुश होता है । इसलिए हमने आप तक यह बैग पहुँचा दिया ।'' माजिद ने कहा ।

फिर दोनों भाई ख़ुशी-ख़ुशी घर की ओर चल पड़े ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो –

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
पाठशाला	=	स्कूल, मदरसा	अचानक	=	यकायक
प्रशंसा	=	तारीफ़	प्रसन्न	=	ख़ुश

2. उत्तर लिखो –

(क) साजिद को रास्ते में क्या मिला?

(ख) बैग में क्या था?

(ग) बच्चों ने बैग को अपने पास क्यों नहीं रखा?

(घ) हेडमास्टर साहब क्यों प्रसन्न हुए?

3. पूरा करो –

(क) दोनों एक ही .... में पढ़ते थे।

(ख) मास्टर साहब बहुत .... होंगे।

(ग) बच्चों की .... पर वे बहुत प्रसन्न हुए।

(घ) हेडमास्टर ने दोनों की बड़ी .... की।

(ङ) किसी की खोई हुई चीज़ उस तक पहुँचाने से .... ख़ुश होता है।

4. बताओ –

इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?

पाठ-9

साँप

एक था लालू । एक था कालू । दोनों दोस्त थे । साथ उठते, साथ बैठते, साथ खाते और साथ ही खेलते । एक दिन की बात है । दोनों खेल रहे थे। खेलते-खेलते दूर निकल गए । जंगल के पास पहुँच गए । कालू आगे बढ़ गया । एक झाड़ी के निकट पहुँच गया । झाड़ी से अचानक एक साँप निकला । साँप देखकर कालू डर गया । वह ज़ोर से चिल्लाया, "साँप! साँप!!"

कालू की आवाज़ सुनकर लालू दौड़ा आया । उसने साँप देखा । वह बिलकुल न डरा । वह बड़ा बहादुर था । तनकर बोला, "कहाँ का साँप, कैसा डर! डर तो बस 'रब' का और डर किसका!"

दोनों ने लाठियाँ लीं ।

लालू ने कालू से कहा, "बढ़ो, आगे बढ़ो ।"

दोनों आगे बढ़े । साँप के पास पहुँचे । साँप ने आहट पाकर फन फैला लिया । वह मुक़ाबले के लिए तैयार हो गया । लालू ने ज़ोर से

लाठी जमाई । साँप घायल हो गया । इधर-उधर बल खाने लगा । फिर क्या था, कालू ने भी दो-चार लाठियाँ जमाईं । साँप वहीं ढेर हो गया ।
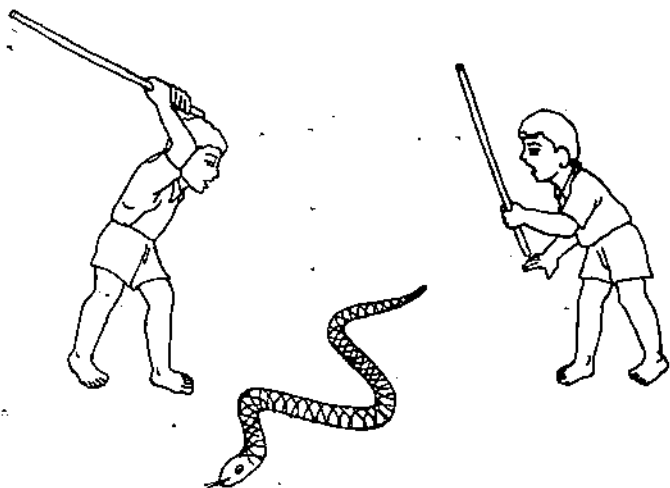
दोनों बड़े बहादुर निकले । शोर मचाते घर को लौटे । सबने उनकी पीठ ठोंकी ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो —

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
रब	=	पालनेवाला	बल खाना	=	लहराना, टेढ़े-मेढ़े चलना
ढेर होना	=	मर जाना			
पीठ ठोंकी	=	शाबाशी दी			

2. उत्तर लिखो —

   (क) लालू और कालू कौन थे?

   (ख) उन्होंने जंगल में क्या देखा?

   (ग) साँप से कौन डर गया?

(घ) लालू साँप से क्यों नहीं डरा?

(ङ) हमें किससे डरना चाहिए?

3. उल्टे शब्द (विलोम) लिखो –

बहादुर	–	डरपोक	दिन	–	....
अच्छा	–	....	बड़ा	–	....
ऊपर	–	....	इधर	–	....

4. सही वाक्य के सामने (✓) और ग़लत वाक्य के सामने (×) का चिह्न लगाओ –

(क) झाड़ी में एक बकरी थी । ( )

(ख) कालू बहादुर था । ( )

(ग) लालू बिलकुल न डरा । ( )

(घ) दोनों आगे बढ़े । ( )

(ङ) दोनों ने लाठियाँ नहीं उठाईं । ( )

(च) सबने उनकी पीठ ठोंकी । ( )

5. समझो और लिखो –

दो – दोनों

तीन – .... चार – ....

पाँच – ....

पाठ-10

तितली
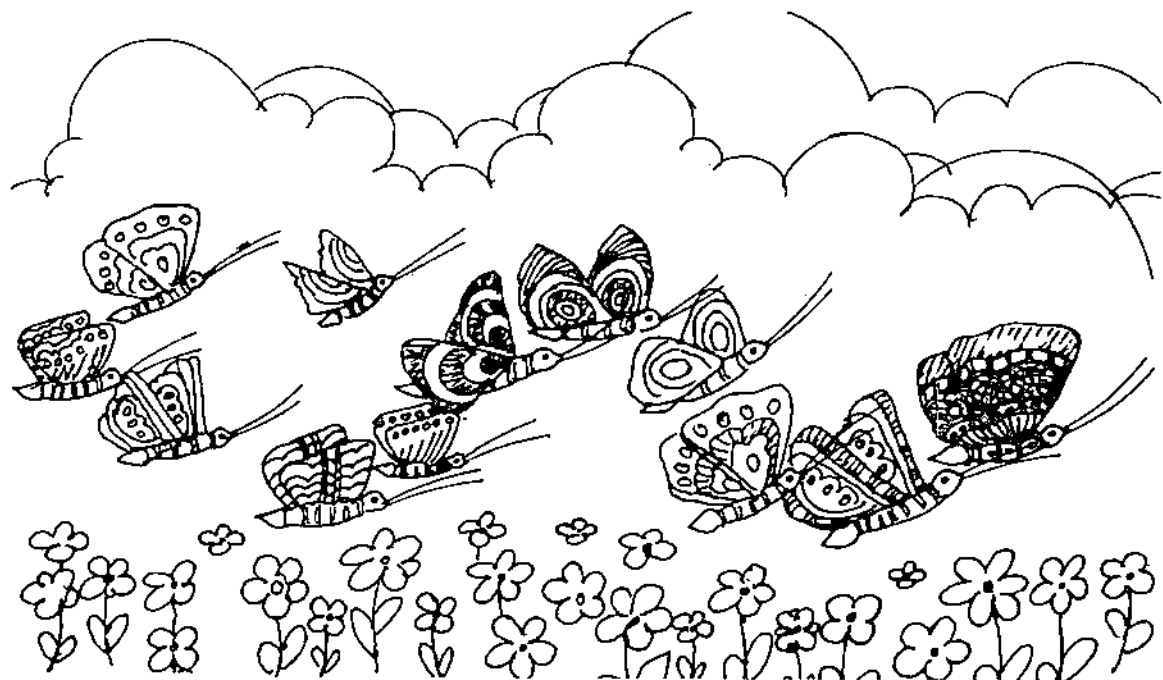
बाजी, देखो नीली तितली
काली तितली, पीली तितली
हरी, सफ़ेद, लाल और चितली
बाजी, यह है अच्छी तितली
देखो बाजी, फूल-फूल का
मीठा रस है पीती तितली ।

हाँ-हाँ, बाजी, चुपके-चुपके
ज़रा हिलो, बस चल दी तितली
मेरी तितली है यह बाजी
मैंने पहले देखी तितली
ना-ना बानो, जाने भी दो
होगा पाप जो पकड़ी तितली।

ईश्वर ने है इसे बनाया
तेरी नहीं, यह उसकी तितली
उसने सारे फूल खिलाए
जिनका रस है पीती तितली
सब जानों पर दया करो तुम
जान है रखती नन्हीं तितली ।

आँखों को है भाती तितली
रब का गुण है गाती तितली ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो –

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
चितली	=	रंग-बिरंगी	पाप	=	गुनाह

दया = मेहरबानी

आँखों को भाना = देखने में अच्छा लगना, सुहाना

2. उत्तर लिखो –

(क) तितलियाँ किन-किन रंगों की होती हैं?

(ख) फूल पर बैठकर तितली क्या करती है?

(ग) तितली को किसने बनाया?

(घ) सारे फूलों को किसने खिलाया?

3. पूरा करो –

(क) ईश्वर ने है इसे बनाया

.... ।

(ख) ....

जिनका रस है पीती तितली ।

(ग) सब जानों पर दया करो तुम

.... ।

4. करो –

फुलवारी जाओ और वहाँ रंग-बिरंगी तितलियों को देखो ।

पाठ-11

छुट्टी

स्कूल में गरमी की छुट्टी हुई । जमील, महमूद, सलीम और उनके बहुत से साथियों ने आपस में तय किया कि कल हम सब आम खाने के लिए बाग़ में जाएँगे।

दूसरे दिन बच्चों की एक टोली तैयार हुई । टोली आम के बाग़ पहुँची । बाग़ में आम ख़ूब फले थे । आम देखकर सब बहुत ख़ुश हुए। बाग़वाले से ढेर सारे आम ख़रीदे । सभी बच्चे चाक़ू से काट-काटकर आम खाने लगे । मज़े-मज़े के आम थे । सबने ख़ूब खाया । आम खाने के बाद चाक़ू बन्द करके जेब में रखा और इधर-उधर खेलने लगे।

महमूद लापरवाह था। उसने अपना चाक़ू खुला छोड़ दिया । खेल-खेल में वह पेड़ पर चढ़ा । डाली कमज़ोर थी,

टूट गई । महमूद नीचे गिरा । उसका हाथ खुले चाक़ू पर पड़ा । हाथ कट गया । हाथ से बहुत ख़ून बहने लगा ।

बच्चे घबरा गए । जमील ने अपने रूमाल से कटे हुए हाथ को बाँध दिया । ख़ून बहना रुक गया ।

बच्चों ने महमूद को तुरन्त अस्पताल पहुँचाया । सलीम उसके पिता को बुलाने चला गया । डॉक्टर ने महमूद के घाव पर टाँके लगाए और मरहम-पट्टी की ।

कुछ ही देर में महमूद के पिताजी आ गए । वे घबराए हुए थे । आते ही-उन्होंने डॉक्टर से महमूद का हाल मालूम किया ।

डॉक्टर साहब ने उन्हें तसल्ली देते हुए कहा, "घबराने की कोई बात नहीं है । घाव बहुत गहरा नहीं है । जल्द ही भर जाएगा ।"

महमूद को उसी दिन अस्पताल से छुट्टी मिल गई । उसका घाव भरने में दो सप्ताह लग गए । इस बीच वह अपनी असावधानी पर पछताता रहा । आगे उसने इस प्रकार की लापरवाही न करने का निश्चय किया । ठीक होने पर उसने अल्लाह का शुक्र अदा किया । उसके माता-पिता ने भी अल्लाह का शुक्र अदा किया । उन्होंने प्रसन्न होकर बच्चों को मिठाइयाँ खिलाईं ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो –

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
असावधानी	=	लापरवाही	निश्चय	=	पक्का इरादा

2. उत्तर लिखो –

(क) बच्चे टोली बनाकर कहाँ गए थे?

(ख) बाग़ में बच्चों ने क्या ख़रीदा?

(ग) महमूद का हाथ कैसे कटा?

(घ) बच्चों ने महमूद के हाथ से बहते ख़ून को कैसे रोका?

(ङ) महमूद को उसके साथी कहाँ ले गए?

(च) डॉक्टर ने क्या किया?

(छ) महमूद का घाव भरने में कितना समय लगा?

(ज) महमूद क्यों पछताता रहा?

(झ) महमूद के माता-पिता ने महमूद का घाव ठीक होने पर क्या किया?

3. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरा करो –

(क) बच्चों ने बाग़ में आम............खाए। (चुराकर/ख़रीदकर)

(ख) बच्चों ने महमूद को...........पहुँचाया। (घर/अस्पताल)

(ग) घाव को देखकर बच्चे................। (घबरा गए/रोने लगे)

(घ) महमूद की.........से उसका हाथ कटा ।

(चालाकी/असावधानी)

4. हर एक शब्द को पाँच-पाँच बार लिखो —

छुट्टी बच्चों आम अस्पताल डॉक्टर तसल्ली

सप्ताह अल्लाह शुक्र मिठाई मरहम-पट्टी ।

5. किसी बाग़ की सैर करो और इन प्रश्नों के उत्तर दो —

(क) बाग़ तुम्हारे घर से कितनी दूरी पर है?

(ख) तुम बाग़ तक किस सवारी से गए थे?

(ग) तुमने वहाँ किन-किन फलों के पेड़ देखे?

(घ) तुमने वहाँ कौन-कौन सा खेल खेला?

(ङ) तुम वहाँ से कब लौटे?

पाठ-12

पहेलियाँ

1

लाल वर्दी पहनता हूँ ।
चिट्ठी-पत्री खाता हूँ ।
बताओ, मैं कौन हूँ ?

2

अब्बा जान एक डिब्बा लाए ।
ना कुछ खाए, ना कुछ पिए ।
कान मरोड़ो फ़ौरन गाए ।
देश-देश की ख़बर सुनाए ।

3

हरी थी, मन भरी थी,
नौ लाख मोती जड़ी थी ।
राजा जी के बाग़ में,
दुशाला ओढ़े खड़ी थी ।

4

देखने में लाठी, खाने में मिठाई।
दादी माँ ने मुझे दिखाई।

5

एक कहानी मैं कहूँ, सुन ले मेरे पूत।
बिना पंख वह उड़ चली, बाँध गले में सूत।

उत्तर : 1. पत्र-पेटी, 2. रेडियो, 3. मकई का भुट्टा, 4. गन्ना 5. पतंग।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो —

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
वर्दी	=	पोशाक	चिट्ठी	=	ख़त
मोती जड़ना	=	मोती टाँकना	दुशाला	=	मोटी चादर
पूत	=	बेटा, पुत्र			

2. हर एक शब्द को पाँच-पाँच बार लिखो —

वर्दी, डिब्बा, अब्बा, पूत, दुशाला, मिठाई, दिखाई, चिट्ठी।

3. करो —

तुम भी इसी प्रकार की 10 पहेलियाँ अपनी कॉपी पर लिखो और कक्षा में बुझाओ।

पाठ-13

चुटकुले

1

शाहिद : पिताजी, आपको पाँच सौ रुपये का लाभ हो गया ।

पिताजी : वह कैसे?

शाहिद : आपने मेरे पास होने पर एक साइकिल दिलवाने का वादा किया था ना ।

पिताजी : हाँ, तो फिर?

शाहिद : मैं फ़ेल हो गया ।

2

बेटा : अब्बूजी, आप हमें स्कूल क्यों भेजते हैं?

पिता : तुम्हें डॉक्टर बनाने के लिए ।

बेटा : लेकिन हमें तो वहाँ मुर्ग़ा बनाया जाता है ।

3

विद्यार्थी : (दुकानदार से) हमें कैलेंडर चाहिए ।

दुकानदार : तुम्हें कौन-सा कैलेंडर चाहिए?

विद्यार्थी : जिसमें ज़्यादा छुट्टियाँ हों ।

4

राशिद : (मुन्ना से) क्या तुम पास हो गए हो?

मुन्ना : हाँ, हमारी पूरी कक्षा पास हो गई है । परन्तु हमारे शिक्षक फ़ेल हो गए?

राशिद : वह कैसे?

मुन्ना : वे अभी भी उसी कक्षा में पढ़ा रहे हैं ।

5

एक छोटी बच्ची ने पहली बार टेलीफ़ोन पर अपने पिताजी की आवाज़ सुनी तो रोने लगी ।

उसकी माँ ने पूछा : बेटी, क्या बात है? क्यों रो रही हो?

बच्ची बोली : अब हम टेलीफ़ोन के अन्दर से अब्बू को कैसे निकालेंगे?

6

शिक्षक : बच्चो! बताओ, लन्दन दूर है या चाँद?

एक लड़का : (जल्दी से) लन्दन।

शिक्षक : वह कैसे?

लड़का : क्योंकि चाँद तो यहाँ से दिखाई देता है, पर लन्दन नहीं।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो —

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
लाभ	=	फ़ायदा	विद्यार्थी	=	तालिबे-इल्म

2. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो —

(क) चुटकुले .... के लिए होते हैं। (हँसाने/रुलाने)

(ख) हमने चुटकुले से .... सीखा। (हँसना/क़हक़हे लगाना)

(ग) हम .... को चुटकुले सुनाते हैं। (दोस्तों/अजनबियों)

3. हर एक शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखो —

मुर्ग़ा, कैलेंडर, छुट्टियाँ, विद्यार्थी, टेलीफ़ोन।

4. करो —

इन चुटकुलों को याद करो और अपनी कक्षा में सुनाओ।

पाठ-14

हज़रत आइशा (रज़ि०)

हज़रत आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) प्यारे रसूल मुहम्मद (सल्ल०) की पत्नी थीं । इसी लिए आप 'उम्मुल मोमिनीन' (मुसलमानों की माँ) कहलाती हैं । आपके पिता का नाम अबू बक्र (रज़ि०) तथा माता का नाम रूमान था । हज़रत आइशा (रज़ि०) का पालन-पोषण पूरी तरह इस्लामी वातावरण में हुआ ।

हज़रत आइशा (रज़ि०) बचपन में खेलों में बड़ी रुचि लेती थीं । आपकी हमजोलियों की एक टोली थी । आप अपनी सहेलियों के साथ नाना प्रकार के खेल खेला करती थीं । वे आपके साथ खेलने में कभी रूठती न थीं । आप भी सबको प्रसन्न रखती थीं ।

खेलों में हज़रत आइशा की सबसे अधिक रुचि झूला झूलने तथा गुड़ियों के साथ खेलने में थी । आप गुड़िया खुद ही बना लेती थीं । आपके खिलौनों में एक घोड़ा भी था । उसके दो पंख थे । आपको कहानी कहने और सुनने का भी बड़ा शौक़ था ।

हज़रत आइशा बचपन से ही समझदार और बुद्धिमान थीं । जिस

बात को एक बार सुन लेतीं, उसे याद रखतीं । आपने बचपन ही में क़ुरआन पढ़ना सीख लिया था।

हज़रत आइशा (रज़ि०) ने अपने पिता हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की सहायता से अरब के बड़े-बड़े कवियों की कविताएँ याद कर ली थीं। आपने प्यारे रसूल (सल्ल०) से बहुत-से रोगों का इलाज भी सीख लिया था ।

हज़रत आइशा (रज़ि०) प्यारे रसूल (सल्ल०) की बड़ी सेवा करती थीं । दातुन छीलना, वुज़ू के लिए पानी रखना, कपड़े तथा सिर धोना, सिर में कंघा करना, इत्र लगाना, बिस्तर बिछाना इत्यादि काम ख़ूब शौक़ से करती थीं ।

हज़रत आइशा (रज़ि०) को ज्ञान प्राप्त करने का बहुत शौक़ था । प्यारे रसूल (सल्ल०) से पूरे नौ साल तक ज्ञान प्राप्त किया । अतः आप इतनी ज्ञानवान हो गईं कि लोग आपके पास दीन की बातें पूछने और सीखने आते । आप उन्हें अच्छी तरह बता और सिखा देतीं ।

प्यारे रसूल (सल्ल०) की घरेलू ज़िन्दगी के बारे में सबसे अधिक जानकारी हमें हज़रत आइशा (रज़ि०) ही के द्वारा मिली । आपने दीन की बातों को कभी छिपाया नहीं, बल्कि आपने दूसरे लोगों को उन बातों की शिक्षा दी । आपके शिष्यों की संख्या लगभग दो सौ थी ।

हज़रत आइशा (रज़ि०) का जीवन सादा और विचार उच्च थे । घर का सारा काम आप स्वयं करतीं । घर की सफ़ाई करना, अनाज पीसना, आटा गूँधना, रोटियाँ पकाना इत्यादि काम आप बड़ी लगन से करती थीं । मेहमानों का आदर-सत्कार भी आप ख़ूब करतीं । घर में जो कुछ होता मेहमानों के सामने पेश कर देतीं । आप दीन-दुखियों की भी दिल खोलकर सहायता करतीं । जो कुछ अन्न और पैसे आपके पास होते, ग़रीबों में बाँट देतीं ।

एक बार एक महिला अपनी छोटी-छोटी दो बच्चियों को लेकर हज़रत आइशा (रज़ि०) के पास आई । उसने आपसे सहायता माँगी । उस समय घर में खजूर के एक दाने के सिवा कुछ न था । आपने उसे वही खजूर दे दिया ।

हज़रत आइशा (रज़ि०) सदा दिल लगाकर इबादत करतीं, नमाज़ पढ़तीं तथा ख़ूब रोज़े रखतीं । 67 वर्ष की आयु में आपका देहान्त हो गया । अल्लाह आपसे राज़ी हो!

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो —

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
पत्नी	=	बीवी	पालन-पोषण	=	परवरिश
वातावरण	=	माहौल	रुचि	=	दिलचस्पी

बुद्धिमान	=	अक़्लमन्द	कवियों	=	शायरों
कविताएँ	=	नज़्में	ज्ञानवान	=	जानकार
रोगों	=	बीमारियों	दीन	=	धर्म
शिष्यों	=	शागिर्दों	दीन-दुखियों	=	ग़रीबों
महिला	=	औरत	व्यक्ति	=	शख़्स
सहायता	=	मदद	संतुष्ट	=	मुत्मइन
द्वारा	=	ज़रिया	इत्यादि	=	वग़ैरह
देहान्त	=	वफ़ात, मृत्यु			

2. उत्तर लिखो —

(क) हज़रत आइशा (रज़ि॰) प्यारे रसूल (सल्ल॰) की कौन थीं?

(ख) हज़रत आइशा (रज़ि॰) के माता-पिता के क्या नाम थे?

(ग) बचपन में हज़रत आइशा (रज़ि॰) की सबसे अधिक रुचि किन-किन खेलों में थी?

(घ) हज़रत आइशा (रज़ि॰) ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) से कितने वर्ष तक ज्ञान प्राप्त किया?

(ङ) लोग हज़रत आइशा (रज़ि॰) के पास किस लिए आते थे?

(च) हज़रत आइशा (रज़ि॰) कैसा जीवन पसन्द करती थीं?

3. सही शब्द चुनकर लिखो —

(क़ुरआन, मुसलमानों, सेवा, सहायता)

(क) हज़रत आइशा (रज़ि॰) .... की माँ कहलाती हैं।

(ख) आपने बचपन ही में .... पढ़ना सीख लिया था।

(ग) आप प्यारे रसूल (सल्ल॰) की बड़ी ....करती थीं।

(घ) आप दीन-दुखियों की भी दिल खोलकर .... करतीं।

4. हर एक शब्द को पाँच-पाँच बार लिखो —

पत्नी	नाना प्रकार	रुचि	वातावरण
बुद्धिमान	प्राप्त	शिष्यों	संख्या
व्यक्ति	देहान्त	ज्ञानवान	अल्लाह

पाठ-15

बुरा लड़का

लड़का जो वह खड़ा है । देखो, कैसा बुरा है ॥
मैं जानता हूँ उसको । पहचानता हूँ उसको ॥
उठता नहीं है सो के । वह सुबह को सवेरे ॥
मुँह, हाथ, पैर, कपड़े । उसके हैं कितने मैले ॥
और अपने दाँत उसने । जैसे कभी न माँजे ॥
रहता है कितना गन्दा । अल्लाह का यह बन्दा॥
पढ़ने से जी चुराता । मकतब से भाग जाता ॥
माँ-बाप का भी कहना । उसने कभी न माना ॥
हर एक से है लड़ता । लड़ता है और झगड़ता ॥
वह बातचीत किसी से । करता नहीं अदब से ॥
बेकार मुँह न खोलो । उससे अधिक न बोलो॥

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो और लिखो –

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
माँजे	= साफ़ किए	जी चुराना	= काम से बचना
मकतब	= स्कूल, पाठशाला	अदब	= सलीक़ा, शिष्टता
अधिक	= ज़्यादा		

2. उत्तर लिखो –

(क) बुरे लड़के के कपड़े और दाँत कैसे हैं?

(ख) पाठशाला से कौन भाग जाता है?

(ग) बुरा लड़का दूसरों के साथ क्या करता है?

(घ) अच्छे लड़के में कौन-कौन-से गुण होने चाहिएँ?

(ङ) इस कविता से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?

3. पूरा करो –

(क) .... ।
वह सुबह को सवेरे ॥

(ख) माँ-बाप का भी कहना ।
.... ॥

(ग) .... ।
करता नहीं अदब से ॥

4. उल्टे (विलोम) शब्द लिखो –

अच्छा	–	बुरा			
जागना	–	....	गन्दा	–	....
सुबह	–	....	माँ	–	....
लड़का	–	....	अधिक	–	....

5. हर एक शब्द को पाँच-पाँच बार लिखो –

मैं हूँ नहीं मुँह

दाँत माँजे माँ

पाठ-16

प्रतिज्ञा

एक था बालक । उसका नाम था शाहिद । शाहिद के घर में एक रेडियो था । रेडियो बिजली से बजता था ।

एक दिन की बात है । उसका मित्र राशिद उसके घर खेलने आया। दोनों साथ-साथ खेल रहे थे । खेलते-खेलते कमरे में पहुँच गए। अम्मी पड़ोस में चली गई थीं । घर ख़ाली था । राशिद रेडियो को छेड़ने लगा । शाहिद ने रोका । राशिद न माना । बटन घुमा दिया । रेडियो बजने लगा । उसने दूसरे बटन भी घुमा दिए । ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ आने लगी ।

अब राशिद डरा और लगा बन्द करने । जानता तो था नहीं । रेडियो से और ज़ोर की आवाज़ आने लगी । उसने रेडियो बन्द करने के लिए घबराहट में बिजली के तारों को छेड़ा । अचानक बिजली का झटका लगा । झटका लगते ही वह दूर जा गिरा और बेहोश हो गया ।

शाहिद ने शोर मचाया । अम्मी दौड़ी आईं । उसे तुरन्त डॉक्टर के पास ले गईं । डॉक्टर ने शरीर की मालिश करवाई और दवा दी ।

काफ़ी देर बाद राशिद को होश आया । उसे कई दिन अस्पताल में रहना पड़ा ।
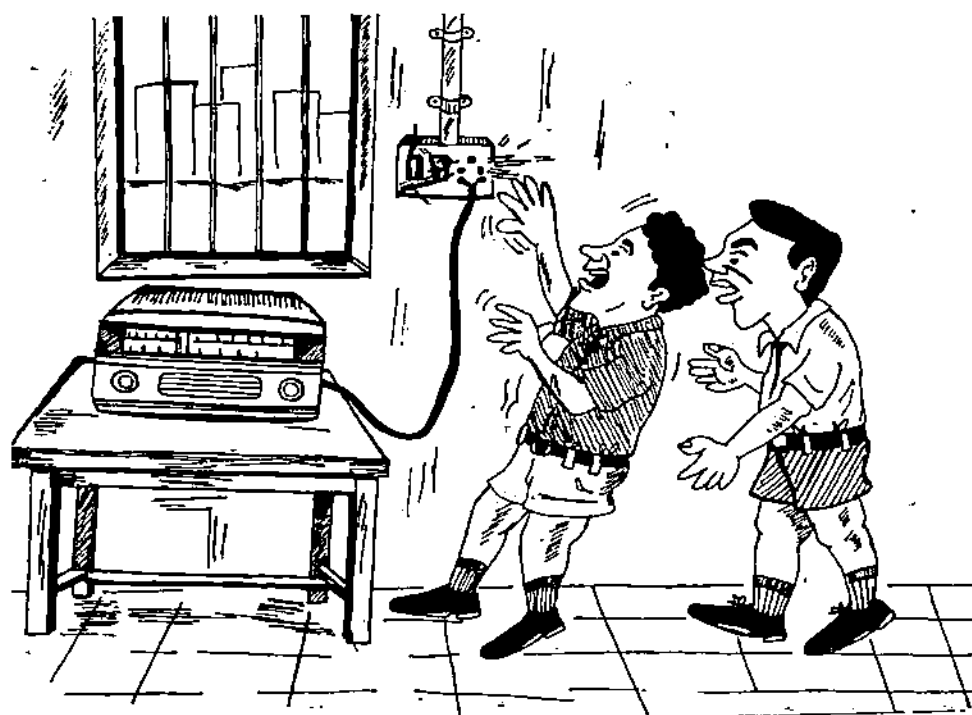
राशिद अब बिलकुल ठीक है । घर आकर उसने प्रतिज्ञा की कि अब वह बिजली की चीज़ों से कभी छेड़-छाड़ नहीं करेगा ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो –

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
बालक	=	लड़का	तुरन्त	=	फ़ौरन
प्रतिज्ञा	=	पक्का इरादा	शरीर	=	बदन, देह

2. उत्तर लिखो –

(क) अम्मी कहाँ चली गई थीं?

(ख) रेडिया कैसे बजा?

(ग) बिजली के तारों को छूने से क्या हुआ?

(घ) शाहिद की अम्मी ने क्या किया?

(ङ) राशिद ने क्या प्रतिज्ञा की ?

3. पूरा करो –

(क) ज़ोर-ज़ोर से ....आने लगी ।

(ख) अचानक..............का झटका लगा ।

(ग) शाहिद ने............मचाया ।

(घ) डॉक्टर ने..............की मालिश करवाई ।

4. हर एक शब्द पाँच-पाँच बार लिखो –

रेडियो	आवाज़	झटका	तुरन्त
अस्पताल	डॉक्टर	प्रतिज्ञा	बिजली

पाठ-17

शिक्षक का आदर

बग़दाद में एक बादशाह था । उसका नाम हारून रशीद था । उसके दो पुत्र थे । एक का नाम मामून था और दूसरे का अमीन । उसने दोनों पुत्रों को पढ़ाने के लिए एक शिक्षक नियुक्त किया ।

शिक्षक दोनों राजकुमारों को बड़े प्रेम से पढ़ाते थे । दोनों भाई भी अपने शिक्षक का बहुत आदर करते थे ।

एक दिन की बात है । जब शिक्षक पढ़ाकर जाने लगे तो दोनों राजकुमार दौड़े कि शिक्षक के जूते उनके सामने रख दें । दोनों ने जूते पकड़ लिए ।

''जूते मैं रखूँगा,'' मामून ने कहा ।

''नहीं, जूते मैं रखूँगा,'' अमीन ने कहा ।

दोनों आपस में झगड़ने लगे ।

उन्हें झगड़ते देख शिक्षक ने कहा, ''मेरे अच्छे बच्चो! झगड़ो नहीं। एक-एक जूता उठा लाओ ।''

राजकुमारों ने ऐसा ही किया । शिक्षक बहुत ख़ुश हुए और उन्हें शाबाशी दी ।

बादशाह को जब इस बात की सूचना मिली तो वह बहुत प्रसन्न हुआ । उसने दोनों राजकुमारों को बुलवाया और कहा, "प्यारे बेटो! अपने शिक्षक का आदर करने में एक-दूसरे से बढ़ जाने का आज तुमने जो प्रयत्न किया है, उससे मेरा दिल बहुत प्रसन्न है ।"

बादशाह ने इस सराहनीय कार्य के लिए दोनों राजकुमारों को ढेर सारे पुरस्कार दिए । बड़े होकर दोनों राजकुमार बादशाह हुए ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो —

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
पुत्र	=	बेटा	शिक्षक	=	उस्ताद
नियुक्त करना	=	किसी काम पर लगाना			
राजकुमार	=	राजा का बेटा	प्रेम	=	मुहब्बत
आदर	=	इज़्ज़त	सूचना	=	ख़बर
प्रयत्न	=	कोशिश			
सराहनीय	=	तारीफ़ के लायक़	कार्य	=	काम
पुरस्कार	=	इनाम			

2. उत्तर लिखो —

(क) हारून रशीद कहाँ का बादशाह था?

(ख) हारून रशीद के कितने पुत्र थे? उनके नाम लिखो ।

(ग) दोनों राजकुमार किस बात पर झगड़ने लगे?

(घ) बादशाह ने अपने दोनों पुत्रों को पुरस्कार क्यों दिया?

3. समझो और लिखो —

झगड़ा	झगड़े	झगड़ों
चेहरा	....	....
जूता	....	....
बेटा	....	....

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो —

नियुक्त, पुरस्कार, प्रेम

(क) उसने दोनों पुत्रों को पढ़ाने के लिए एक शिक्षक .... किया ।

(ख) शिक्षक दोनों राजकुमारों को बड़े .... से पढ़ाते थे ।

(ग) बादशाह ने इस सराहनीय कार्य के लिए दोनों राजकुमारों को ढेर सारे .... दिए ।

पाठ-18

चीनी

मीठी चीज़ें तो सभी पसन्द करते हैं । तुम आए दिन टॉफ़ी तथा मिठाई खाते रहते हो । चाय, कॉफ़ी तथा दूध दिन में कई-कई बार पीते हो । इन समस्त चीज़ों में चीनी का प्रयोग होता है । अत: चीनी हमारे लिए बहुत उपयोगी चीज़ है । क्या तुम जानते हो कि चीनी कैसे बनती है?
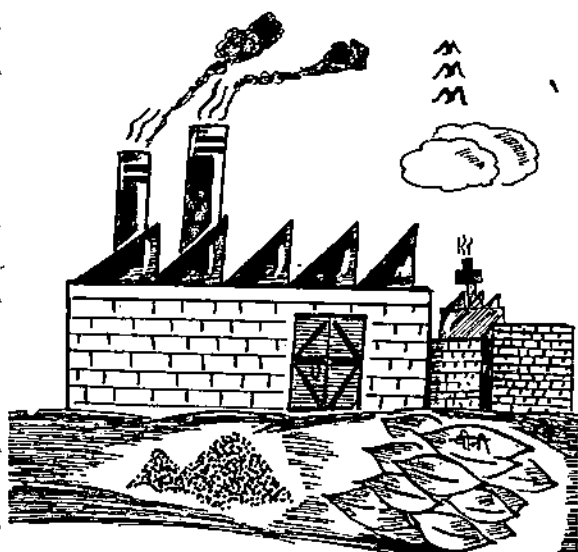
चीनी अधिकतर गन्ने के रस से बनाई जाती है । गन्ना खेतों में पैदा किया जाता है । वहाँ से गन्ना बैलगाड़ियों, ट्रेक्टरों, ट्रकों इत्यादि द्वारा चीनी मिलों तक पहुँचाया जाता है । मिलों में बड़ी-बड़ी मशीनों के द्वारा गन्ने का रस निकाला जाता है । मशीनों द्वारा ही रस को छाना जाता है । फिर उसमें रसायन मिलाकर उसका मैल साफ़ किया जाता

है । इसके बाद गन्ने के रस को बड़ी-बड़ी टंकियों में पकाया जाता है। रस धीरे-धीरे गाढ़ा होने लगता है । अन्त में एक दानेदार गाढ़ा पदार्थ बन जाता है । गाढ़े पदार्थ को चक्कियों में डालकर घुमाया जाता है जिससे यह पदार्थ दानेदार चीनी का रूप ले लेता है । परन्तु यह चीनी गीली होती है । अतः इसे सुखाने के लिए उन मशीनों में भेजा जाता है जिनमें बिजली के शक्तिशाली पंखे लगे होते हैं । ये पंखे चीनी के दानों को सुखा देते हैं । ये सारे काम बिजली से चलनेवाली स्वचालित मशीनों द्वारा होते हैं ।

दानों के आकार के आधार पर चीनी के अलग-अलग दरजे होते हैं । सबसे मोटे दाने की चीनी उत्तम होती है । मध्यम आकार के दानेवाली चीनी मध्यम दरजे की और सबसे छोटे दाने की चीनी निम्न दरजे की होती है ।

अलग-अलग दरजे की चीनी को स्वचालित मशीनों द्वारा अलग-अलग तरह की बोरियों में भरकर बाज़ार तथा गोदामों में भेज दिया जाता है ।

हमारे देश में गन्ने की पैदावार संसार के अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक है । अतः हमारे यहाँ चीनी की पैदावार भी सबसे अधिक है ।

हमारे देश में सबसे अधिक गन्ना उत्तर प्रदेश में पैदा होता है । अतः उत्तर प्रदेश में ही चीनी की सबसे अधिक मिलें हैं और चीनी की

पैदावार भी वहीं सर्वाधिक होती है ।

कितना दयालु है हमारा रब, जिसने ज़मीन से हमारे लिए तरह-तरह की चीज़ें उगाईं । इनसे हम मनपसन्द चीज़ें बनाकर खाते हैं ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो और लिखो —

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
समस्त	=	सब, पूरा	प्रयोग	=	इस्तेमाल
उपयोगी	=	काम का	अधिकतर	=	ज़्यादातर
रसायन	=	एक प्रकार की दवा	अन्त	=	आख़िर
स्वचालित	=	ख़ुद चलनेवाली	आकार	=	शक्ल
उत्तम	=	सबसे अच्छा	मध्यम	=	बीच का
अन्य	=	दूसरा	देश	=	मुल्क
तुलना	=	मुक़ाबला	सर्वाधिक	=	सबसे ज़्यादा

2. उत्तर लिखो —

(क) चीनी से बनी पाँच चीज़ों के नाम लिखो जिन्हें तुम खाते-पीते हो?

(ख) चीनी कैसे बनाई जाती है?

(ग) चीनी कितने प्रकार की होती है?

(घ) हमारे देश में चीनी की पैदावार सबसे अधिक कहाँ होती है?

3. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो –

(क) अन्त में एक दानेदार..........पदार्थ बन जाता है ।

(पतला/गाढ़ा)

(ख) परन्तु यह चीनी..........होती है ।

(पीली/नीली/गीली)

(ग) सबसे मोटे दाने की चीनी..........होती है ।

(मध्यम/उत्तम)

(घ) ....में ही चीनी की सबसे अधिक मिलें हैं ।

(मध्य प्रदेश/उत्तर प्रदेश)

4. इन शब्दों के बहुवचन बनाओ –

गन्ना	–	गन्नों	टंकी	–	टंकियों
मशीन	–		चक्की	–	
चीज़	–		नदी	–	
राज्य	–		गाड़ी	–	
पदार्थ	–		बोरी	–	

5. करो –

पास की किसी चीनी मिल की सैर करो और चीनी बनने की प्रक्रिया को स्वयं देखो ।

पाठ-19

कभी न बोलो झूठ

चाहे अपना हो नुक़सान,
चाहे जाए अपनी जान,

चाहे कर दे कोई शूट,
भैया कभी न बोलो झूठ।

चाहे फट ही जाए सूट,
चाहे छिन ही जाए बूट,

चाहे ले कोई सब लूट,
भैया कभी न बोलो झूठ।

चाहे सब कुछ हो कुरबान,
लेकिन बचा रहे ईमान,

चाहे दुनिया जाए रूठ,
भैया कभी न बोलो झूठ।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो —

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
नुक़सान	=	घाटा	शूट	=	गोली मारना
सूट	=	लिबास	क़ुरबान	=	न्योछावर, बलिदान
ईमान	=	पक्का यक़ीन			

2. पूरा करो —

चाहे अपना हो नुक़सान ।
..................जान ।
चाहे कर दे........... ।
भैया.................. ।

3. हर एक शब्द को पाँच-पाँच बार लिखो —

झूठ	रूठ	बूट	शूट	सूट
लूट	दुनिया	ईमान	भैया	क़ुरबान

4. बताओ —

इस कविता से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?

5. इस कविता को याद करो और कक्षा में सुनाओ ।

पाठ-20

एकता की शक्ति

किसी जंगल में एक पुराना वृक्ष था । उसपर बहुत-से कबूतर बसेरा करते थे । कबूतर दिन भर दाने-दुनके की खोज में घूमते, चर-चुगकर शाम को वापस लौट आते और रात उसी वृक्ष पर बिताते ।

एक दिन की बात है । उस जंगल में एक बहेलिया शिकार की खोज में आया । उसने मैदान में जाल बिछाया, दाने बिखेरे और छिपकर बैठ गया । कबूतरों के झुंड चारे की तलाश में उड़कर जा रहे थे । ज़मीन पर ढेर सारे बिखरे दाने देखकर वे प्रसन्न हो गए । फिर क्या था, वे तुरन्त दानों पर टूट पड़े । उनमें एक बूढ़ा और अनुभवी कबूतर भी था । उसने जब यह देखा तो ज़ोर से चिल्लाया, ''ठहरो, ठहरो! जंगल में इतने दाने कहाँ से आए? अवश्य ही कोई ख़तरा है।''

बूढ़ा कबूतर चिल्लाता रहा, लेकिन किसी ने उसकी एक न सुनी । दाना चुगने के लिए कबूतरों के झुंड जैसे ही नीचे उतरे जाल का फंदा सिमट गया । अब कबूतरों ने उड़ना चाहा तो वे उड़ न सके । वे जाल

में फँस चुके थे । कबूतरों ने जाल से निकलने का बहुत प्रयास किया, किन्तु निकल न सके । वे सब अपनी करनी पर पछताने लगे । जाल से निकलने का उन्हें कोई उपाय नहीं सूझ रहा था।

''अरे वह देखो, बहेलिया हमारी ओर ही आ रहा है । यह जाल उसी का है । इससे निकलने का तुरन्त कोई उपाय करो ।'' एकाएक एक कबूतर चिल्लाया ।

बूढ़ा कबूतर दूर ही से सब कुछ देख रहा था । वह बोला, ''साथियो, तुमने मेरी बात न मानकर यह मुसीबत मोल ली है । अब घबराओ मत । हिम्मत से काम लो । अल्लाह पर भरोसा रखो । उसी से सहायता माँगो । उसका नाम लेकर सब एक साथ ज़ोर लगाओ और जाल सहित उड़ चलो । एकता में बड़ी शक्ति है ।''
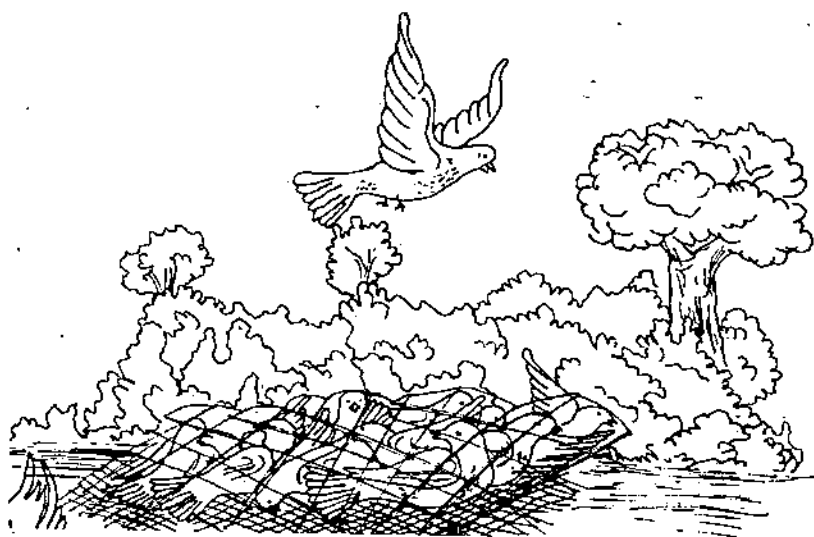
कबूतरों ने बूढ़े कबूतर की बात मान ली । सबने अल्लाह का नाम

लेकर एक साथ ज़ोर लगाया और जाल को ऊपर उठा लिया। फिर क्या था! सभी कबूतर जाल सहित उड़ चले।

बहेलिए ने दूर तक उनका पीछा किया। दौड़ते-दौड़ते वह थक गया। कुछ देर में कबूतर उसकी आँखों से ओझल हो गए। बहेलिया हाथ मलता रह गया।

बूढ़ा कबूतर उनके मार्गदर्शन के लिए आगे-आगे उड़ रहा था। उड़ते- उड़ते वे उस क्षेत्र में पहुँच गए जहाँ एक वृक्ष के नीचे बूढ़े कबूतर का मित्र चूहा रहता था। बूढ़े कबूतर ने सभी कबूतरों को वहाँ उतरने का आदेश दिया। बूढ़े कबूतर ने अपने मित्र को पुकारा। चूहा तुरन्त बिल से बाहर निकल आया। कबूतरों को जाल में फँसा देखकर वह दंग रह गया। बोला, ''अरे, यह क्या! कैसे इस मुसीबत में फँस गए?''

''यह हमारे भाइयों की नासमझी का परिणाम है। ज़रा-से दाने के लालच में इतने बड़े संकट में घिर गए। भाई, इस विपत्ति में हमारी मदद करो। इन्हें जाल से निकालने का तुरन्त कोई उपाय करो।'' बूढ़े कबूतर ने कहा।
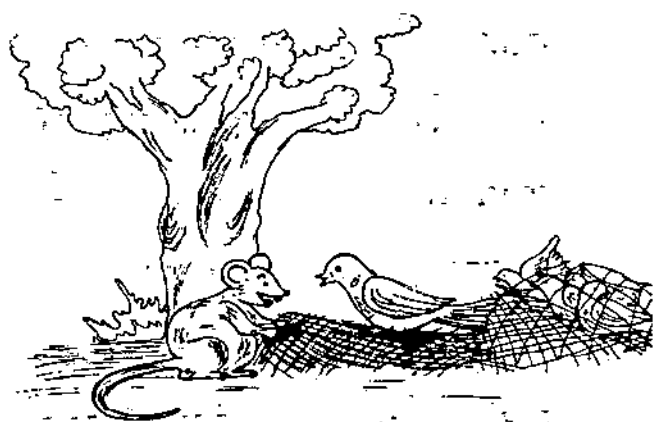
''मित्र, यह कौन-सी बड़ी बात है। मुसीबत में मित्र की मदद करना तो मेरा कर्त्तव्य है। यह लो, अभी जाल काट देता हूँ।'' चूहा बोला और कुछ ही देर में उसने दाँतों से कुतरकर जाल काट डाला।

सभी कबूतर स्वतंत्र हो गए । सबने चूहे को धन्यवाद दिया ।

चूहा बोला, "दोस्तो, धन्यवाद तो अपने बूढ़े-बुज़ुर्ग को दो जिसने तुम्हारा मार्गदर्शन किया और तुम्हें एकता का पाठ पढ़ाया । एकता में बड़ी शक्ति है ।"

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो –

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
वृक्ष	=	पेड़	बसेरा करना	=	रहना
बहेलिया	=	शिकारी	अनुभवी	=	तजुरबेवाला
प्रयास	=	कोशिश	सहित	=	साथ
मार्गदर्शन	=	रास्ता दिखाना	क्षेत्र	=	इलाका
परिणाम	=	नतीजा	संकट	=	ख़तरा
विपत्ति	=	मुसीबत	कर्त्तव्य	=	फ़र्ज़, ज़िम्मेदारी
स्वतंत्र	=	आज़ाद			
पाठ पढ़ाना	=	नसीहत करना, शिक्षा देना			

2. उत्तर लिखो –

(क) कबूतर कैसे रोज़ी पाते थे?

(ख) बहेलिए ने शिकार पकड़ने के लिए क्या किया?

(ग) ख़तरे का आभास किसको हुआ?

(घ) जाल में फँसे कबूतरों ने क्या किया?

(ङ) चूहा किसका दोस्त था? उसने दोस्ती कैसे निभाई?

(च) एकता में क्या होती है?

3. सही शब्दों पर (✓) निशान लगाओ —

(क) वृक्ष के नीचे बूढ़े कबूतर का मित्र/शत्रु रहता था ।

(ख) मित्र! यह कौन-सी बड़ी/छोटी बात है?

(ग) धन्यवाद तो तुम अपने बूढ़े/जवान बुज़ुर्ग को दो ।

(घ) एकता में बड़ी शक्ति होती/नहीं होती है ।

4. हर एक शब्द को पाँच-पाँच बार लिखो —

मित्र	कबूतर	वृक्ष
अनुभवी	परिणाम	स्वतंत्र ।

5. मौखिक प्रश्न —

इस कहानी से तुमने क्या सीखा?

पाठ-21

अनमोल मोती

प्यारे नबी (सल्ल०) की इन शिक्षाओं को ध्यान से पढ़ो, सोचो और अमल करो –

1. सच बोलो, चाहे अपनी ही हानि हो ।
2. बुरे लोगों की संगति से अकेला रहना ही अच्छा है ।
3. जो अपने लिए पसन्द करो, वही दूसरों के लिए भी पसन्द करो।
4. बड़ों का आदर करो और छोटों से प्यार ।
5. तुममें अच्छा वह है जिसके आचरण अच्छे हैं ।
6. अच्छा वह है जिसे उसके पड़ोसी अच्छा कहें ।
7. पेट सभी रोगों का घर है, वास्तविक इलाज परहेज़ है ।
8. पवित्रता आधा ईमान है ।
9. यदि तुम लम्बी उम्र चाहते हो तो ग़ुस्से की आग से बचो ।
10. जिनके दिलों में ईश्वर का डर है, वही नसीहत स्वीकार करते हैं।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो —

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
हानि	=	नुक़सान, घाटा	संगति	=	साथ
आचरण	=	चाल-चलन, व्यवहार	रोग	=	बीमारी
वास्तविक	=	असली	पवित्रता	=	पाकी
स्वीकार	=	क़बूल			

2. उत्तर लिखो —

   (क) हमें बड़ों और छोटों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

   (ख) तुममें अच्छे लोग कौन हैं?

   (ग) लम्बी उम्र का राज़ किस बात में है?

   (घ) नसीहत कौन स्वीकार करते हैं?

3. किन्हीं पाँच शिक्षाओं को याद करो और लिखो ।

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो —

   (क) सच बोलो, चाहे अपनी ही .... हो जाए ।
   (हानि/लाभ)

   (ख) .... की संगति से अकेला रहना ही अच्छा है । (बुरे लोगों/अच्छे लोगों)

(ग) जो अपने लिए .... करो, वही दूसरों के लिए भी पसन्द करो । (पसन्द/नापसन्द)

(घ) अच्छा वह है जिसे उसके पड़ोसी ....कहें । (बुरा/अच्छा)

(ङ) पेट सभी रोगों का घर है, वास्तविक इलाज .... है । (परहेज़/दवा)

(च) पवित्रता आधा..................है । (ईमान/दीन)

5. हर एक शब्द को पाँच-पाँच बार लिखो —

हानि अच्छा प्यार वास्तविक पवित्रता

उम्र गुस्सा ईश्वर स्वीकार आचरण

6. करो —

प्यारे नबी (सल्ल॰) की कुछ और शिक्षाओं के सम्बन्ध में अपने अध्यापक से पूछो ।

पाठ-22

गर्मी की ऋतु

दूर हुई मौसम की नर्मी ।
धूप में आई गर्मी-गर्मी ॥

चारों ओर लगी लू चलने ।
और लगी अब धरती जलने ॥

छाया ही में है सुख मिलता ।
पानी पर है सब ही पिलता ॥

सबको ठण्डक भा गई ।
गर्मी की ऋतु आ गई ॥

बैठे हैं सब पक्षी आकर ।
पेड़ों की डालों में छिपकर ॥

चोंचें खोले हाँफ रहे हैं ।
बाहर थोड़ा झाँक रहे हैं ॥

बाहर चरती थी जो गाय ।
भागी अब वह पूँछ उठाय ।।

छत की छाया पा गई ।
गर्मी की ऋतु आ गई ।।

लो अब सूरज आया सिर पर ।
लोग घुसे कमरों के भीतर ।।

बूढ़े बिस्तर पर जा लेटे ।
काम करें अब उनके बेटे ।।

पंखे हैं सबके हाथों में ।
मन लगता है कब बातों में ।।

अग्नि भी शरमा गई ।
गर्मी की ऋतु आ गई ।।

अभ्यास

1. इन शब्दों के अर्थ याद करो —

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
ऋतु	=	मौसम	लू	=	गर्म हवा
धरती	=	ज़मीन	पिलना	=	एकदम टूट पड़ना
भा गई	=	अच्छी लगी	पक्षी	=	परिन्दा, चिड़िया
भीतर	=	अन्दर	अग्नि	=	आग

2. उत्तर लिखो —

(क) गर्मी में सुख कहाँ मिलता है?

(ख) पक्षी कहाँ छिपकर बैठते हैं?

(ग) जब सूरज सिर पर चढ़ आता है तब लोग कहाँ घुस जाते हैं?

(घ) सबके हाथों में क्या है?

3. पूरा करो —

लो अब ....।

.............के भीतर ।

बूढ़े बिस्तर पर जा लेटे ।

.... उनके बेटे ।

4. हर एक शब्द को पाँच-पाँच बार लिखो —

गर्मी नर्मी ऋतु

पक्षी अग्नि मौसम

5. गर्मी की ऋतु पर पाँच वाक्य लिखो ।

6. करो —

अपने शिक्षक से मालूम करो कि गर्मी की ऋतु के अलावा और कौन- कौन-सी ऋतुएँ होती हैं? गर्मी की ऋतु कब शुरू होती है और कब ख़त्म होती है?